डॉ. वीणा कुमारी सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर और राजनीति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष के पद पर एम एल टी कॉलेज, सहरसा, बी एन मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार में कार्यरत है। उनकी विशेष रुचि महिला अध्ययन, मानवाधिकार, जेंडर सेंसटाइजेशन, और राजनीति विज्ञान के समसामयिक राजनीतिक मुद्दों में है। उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद से ही सामाजिक न्याय और महिला अधिकारों के लिए काम करना शुरू कर दिया था।

अपने शैक्षिक और पेशेवर जीवन में, उन्होंने महिला अधिकारों और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर काम किया है। वह एक सक्रिय शोधकर्ता और लेखक हैं, जिन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में लेख प्रकाशित किए हैं। उनकी विशेषज्ञता और नेतृत्व क्षमता ने उन्हें एक सम्मानित शिक्षक और शोधकर्ता के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने अपने शोध और लेखन के माध्यम से महिला अधिकारों और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया है। उनकी रुचि विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों के प्रति है। उन्होंने कई संगठनों और संस्थाओं के साथ मिलकर महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय के लिए काम किया है। डॉ कुमारी की उपलब्धियों और योगदान को देखते हुए, उन्हें कई पुरस्कार और सम्मान से नवाजा गया है। उनकी शैक्षिक और सामाजिक गतिविधियों ने उन्हें एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्थापित किया है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

प्रकाशकः—

रिस्मा पब्लिशर्स
मधुबनी, बिहार
E-mail : rismapublishers@gmail.com
Website:- www.rismapublishers.com
Mob- 780-80-74762, 829-80-74762

ISBN 978-81-979331-5-8
Rs. 650.00 2025

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में नेतृत्व और शासन

ISBN : 978-81-979331-5-8

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में नेतृत्व और शासन

डॉ. वीणा कुमारी

मूल्य : ₹650.00

प्रकाशकः–

रिस्मा पब्लिशर्स

योगिया, जयनगर,

मधुबनी, 847 226 (बिहार)

मुद्रकः–

गैपमेटा वेंचर्स

नवी मुंबई–400 705

ISBN : 978-81-979331-5-8

संस्करण : 2025

कॉपीराइटः© संपादक

आलोचना, समीक्षा और व्याख्या जैसे अनुसंधान जैसे उद्देश्यों के लिए छोटे अंशो का उद्धरण को छोड़कर इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कही या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

लेखक अपने अध्यायों में पाए गए किसी भी प्रकार की शैक्षणिक कदाचार (यदि कोई हो) के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है।

विषय–सूची

1. पंडित नेहरू : आधुनिक भारत के शिल्पकार
सुधांशु शेखर 1

2. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में केंद्र सरकार और राज्य सरकार में अनुसूचित जातियों के नेतृत्व का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. मधु श्री 16

3. गॉधीजी एवं धर्मनिरपेक्षता्
डॉ. भुपेन्द्र कौर 21

4. भारत में जातीय विमर्शः हिंदी साहित्य के संदर्भ में
डॉ महन्ती प्रसाद यादव 27

5. नरेंद्र मोदी का राजनीतिक प्रशासन और शासन में भारतीय लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया की भूमिका– एक आलोचनात्मक परीक्षण
प्रियंका भारती एवं डॉ. वीणा कुमारी 34

6. अटल युगः भारतीय लोकतंत्र में प्रशासनिक स्थिरता और नीतिगत नवाचार
अभय कुमार शुक्ल 41

7. महिला सशक्तिकरण तथाा स्थानीय स्वशासन
डॉ. प्रियम 47

8. नारी शक्ति का राजनीतिक परिदृश्य : एक अध्ययन
डॉ. सुलेखा कुमारी 59

9. सामाजिक प्रभुत्व की राजनीति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. रघुबर प्रसाद सिंह 66

10. महिला सशक्तिकरण की राजनीति
पार्वती कुमारी 72

गॉधीजी एवं धर्मनिरपेक्षता

डॉ. भुपेन्द्र कौर

सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग स्कूल ऑफ एजूकेशन एण्ड ह्यूमैनिटीज,
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

Email: srsingh2472@gmail.com

DOI-10.5281/zenodo.19144367

परिचय

महात्मा गॉधी एक साथ ही एक पैगम्बर, एक सन्त, एक महामानव तथा एक नैतिक राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने राजनीति को कभी धर्म से अलग नहीं माना और सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह के साधनों से भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का संचालन किया। उन्होंने साधन और साध्य का चुनाव कुछ ऐसे किया जिससे सार्वजनिक जीवन में मनुष्य को चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक बल मिलता था। महात्मा गॉधी का सम्पूर्ण जीवन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक सभी प्रकार के अभियानों द्वारा वे एक आध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए कृत–संकल्पित थे। उनका संदेश विशेषतः भारत के आध्यात्मिक उत्थान के लिए था।

गॉधीजी ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने धर्म को आत्मोद्धार का एक साधन मानने के साथ–साथ उसे व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की समस्याओं के समाधान का एक उपकरण माना किन्तु गॉधीजी का धर्म औपचारिक अथवा परम्परागत नहीं है। अपने 'धर्म' की धारणा को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि 'धर्म' वह है जो सभी धर्मो में अन्तर्निहित है तथा जो हमें अपने निर्माता के आमने–सामने ला देता है। वे उस धर्म को मानने के लिए तैयार नहीं थे, तो विवेक सम्मत नहीं हो अथवा नैतिकता के विरूद्ध हो। उसे व्यवहारिक कार्यकलापों में विद्यमान होना चाहिए तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करना चाहिए। गॉधीजी ने अपने धर्म के विषय में विस्तार से विवेचन किया है। गॉधीजी ने अपने दर्शन में धर्म को सर्वोपरि स्थान देते हुए कहा कि मैने आज तक जो कुछ भी कहा है तथा जो कुछ भी किया है उसके पीछे एक धार्मिक चेतना और एक धार्मिक उद्देश्य रहा है। वस्तुतः गॉधी का सम्पूर्ण राजनीतिक दर्शन तथा उनके समस्त साधन उनके धार्मिक तथा नैतिक सिद्धान्त के उप सिद्धान्त हैं। गॉधीजी के विचारानुसार "धर्म–शून्य राजनीति मौत के फन्दे के समान है, जो आत्मा को नष्ट कर देती है।" उनका विश्वास था कि बिना नैतिक अथवा धार्मिक आधार के, जीवन एक टेढी–मेढी तथा दिशाविहीन पगडण्डी के समान है, क्योंकि मनुष्य के दूसरे कार्यो की भाँति राजनीति भी या तो धर्म अथवा अधर्म द्वारा अनुशासित होती है। धर्म के नैतिक आधार के बिना जीवन अर्थहीन एवं निष्फल हो जाता है। मानव जीवन से पृथक् गॉधीजी किसी भी धर्म के अस्तित्व को नहीं मानते थे। वे सभी धर्मों की मूलभूत एकता में विश्वास करते थे और धर्म को जीवन का अंग और उपअंग मानकर उसे जीवन की प्रतिछाया मानते थे। उनके अनुसार मानव–जीवन का प्रत्येक पहलू धर्म द्वारा नियन्त्रित होना चाहिए।

गॉधीजी की मान्यता थी कि धर्म मनुष्य के जीवन की धुरी है तथा राजनीति अपनी तमाम बुराइयों के बावजूद भी मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि, "यदि मैं राजनीति में भाग लेता हूँ तो उसका एकमात्र कारण यही है कि राजनीति वर्तमान समय में हमें सर्प

की कुण्डलियों की भाँति घेरे हुए है, जिसके चंगुल से अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कोई नहीं निकल सकता है। अतः मैं इस सर्प से द्वन्द्व युद्ध करना चाहता हूँ। मैं राजनीति में धर्म को लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।" धर्म ही गॉधीजी को राजनीति नहीं त्यागने को विवश करता है। जीवन का लक्ष्य है आत्म–साक्षत्कार करना और गॉधीजी का विश्वास था कि आत्म–साक्षात्कार के लिए यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण मानव–जाति के साथ तादात्म्य स्थापित किया जाए और सबके हित में, सबके कल्याण हेतु कार्य किया जाए। राजनीति में भाग लिए बिना वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य के सभी कार्य जीवन समष्टि के अविभाज्य अंग होते हैं। आज आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक कार्य एक–दूसरे से पृथक् नहीं किए जा सकते। गॉधीजी का मत था कि जो मनुष्य देश–प्रेम को नहीं जानता वह अपने सच्चे कर्तव्य या धर्म को भी नहीं जानता है। धर्म मानव–सेवा, सर्व हित, सर्व कल्याण, उेश–प्रेम आदि सभी का समष्टि रूप है। गॉधीजी ने धर्म की सृजनात्मक शक्ति को स्वीकार किया और धर्म उनके लिए नैतिक अनुशासन की व्यवस्था थी। उन्होंने कहा, "मेरे मत में धर्म का अर्थ है–नैतिकता। मैं ऐसे किसी धर्म को नहीं मानता जो नैतिकता का विरोध करता हो या नैतिकता के परे कोई उपदेश देता हो। धर्म तो वास्तव में नैतिकता को व्यवहार में घटित करने की पराकाष्ठा है।" उन्होंने समाज में व्याप्त धर्म के विकृत रूप को देखा और अपने प्रयोगों एवं निष्कर्षो के आधार पर धर्म की पुनर्व्याख्या की। गॉधीजी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्त्व स्वीकार किया और यह माना कि धर्म को निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनों निष्प्राण और शून्य हो जाते हैं।

गॉधीजी ने धर्म के क्षेत्र में संसार के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा। गॉधीजी का धर्म सम्प्रदाय को नहीं मानता था। उनके मत में धर्म तो मानव समाज का शाश्वत तत्त्व है जो हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत से परे है गॉधीजी के आध्यत्मिक चिंतन का सार तत्त्व यह था कि मनुष्य का आत्मिक बल उसके शारीरिक बल से कई गुना अधिक श्रेष्ठ है। आत्मिक बल में सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति एवं मानव–सेवा सम्मिलित थे। वस्तुतः गॉधीजी के लिए उनका नैतिक चिंतन ही आध्यात्मिकता थी। गॉधीजी ने कहा था, "मेरे आध्यात्मिक प्रयोगों को केवल मैं ही जान सकता हूँ।"

यद्यपि गोपाल कृष्ण गोखले ने राजनीति को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने का एक प्रयास किया था और इसके लिए उन्होंने भारत सेवक समाज की स्थापना भी की थी लेकिन भारतीय राजनीति के क्षेत्र में यह गॉधीजी का ही योगदान था कि उन्होंने राजनीति के आध्यात्मिक स्वरूप की न केवल स्थापना की अपितु उसे आम जन के मन में स्थापित भी कराया।

गॉधीजी के दर्शन का मूल आधार : धर्म अथवा राजनीति का आध्यात्मिकरण

गॉधी दर्शन में धर्म–गॉधीजी का दर्शन सत्य एवं ईश्वर जैसी धारणाओं से ओतप्रोत है। वे अन्यान्य राजनेताओं की भाँति नास्तिक और भौतिकवादी नहीं है बल्कि वे एक ऐसे विचारक और कर्मण्यवादी नेता हैं जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म की भूमिका को स्वीकार करते हैं। गॉधीजी ने अपने धर्म के बारे में विस्तार से विवेचन किया है। उनका वास्तविक 'धर्म' हिन्दू से भी ऊपर उठा हुआ था। यद्यपि वे स्वयं को हिन्दू ही मानते थे और स्वयं को सनातनी हिन्दू कहते थे। उन्होंने कहा, "मेरा धर्म हिन्दू धर्म है, जो मेरे लिए मानवता का 'धर्म' है और उसमें सभी धर्मो के सर्वोत्तम तत्त्व है मै। अपने इस धर्म तक सत्य और अहिंसा के माध्यम से पहुँचा हूँ। अब मैं ईश्वर सत्य है, के स्थान पर सत्य ईश्वर है, कहने लगा हूँ। इस

धर्म का दैनिक सामाजिक जीवन पर प्रभाव देखता हूँ। सत्य का साक्षात्कार जीवन के अनन्त महासागर के साथ तादात्म्य किए बिना नहीं किया जा सकता, अतः समाज सेवा से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है।" गॉधीजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन दर्शन का आधार उपनिषदों के इस मूल मंत्र "ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या" को बनाया। उन्होंने वेदान्तिक दर्शन की इस आस्था को स्वीकार किया कि यह सम्पूर्ण संसार ब्रह्म की आध्यात्मिक चेतना से परिव्याप्त हैं और इस संसार में जो कुछ भी है वह इसी ब्रह्म का प्रतिबिम्ब मात्र है और इस सृष्टि में ब्रह्म के अलावा सभी अपूर्ण हैं तथापि वह स्वयं में ब्रह्म के अंश को समाविष्ट करते हैं। इसलिए कहते हैं कि हम लाठी, तलवार, बंदूक सब छोडें और ईश्वर को अपने साथ लेकर चल दें। उनका 'धर्म' वृक्ष की तरह एक है, जिसकी विभिन्न धर्मो के रूप में अनेक शाखाएँ हैं। उन सभी धर्मों का स्त्रोत एक ही है, क्योंकि ईश्वर एक ही है। विभिन्न धर्म उस ईश्वर तक ले जाने के मार्ग हैं। यद्यपि विभिन्न धर्मो में ईश्वर के अलग–अलग नाम बताए हैं किन्तु गॉधीजी के मत में वे उसके व्यक्तित्व की भिन्नता को नही अपितु गुणों की भिन्नता को दर्शाते हैं। विभिन्न धर्म एक ही बिन्दु पर मिलने वाले भिन्न–भिन्न पथ हैं। सभी धर्मों का एक ही समान नैतिक आधार है, जिसे हम विश्व–धर्म कह सकते हैं।

राज्य के सम्बन्ध में गॉधीजी के विचार

समाज में राज्य के स्थान के सम्बन्ध में विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं में अत्यधिक मतभेद रहा है। इस सम्बन्ध में आदर्शवाद जैसी कुछ विचारधाराओं के द्वारा तो व्यक्ति और राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों में राज्य को साध्य रूप में स्वीकार कर लिया है, किन्तु गॉधीजी राज्य को इतना अधिक महत्व देने के लिए तैयार नहीं है और उनके अनुसार व्यक्ति साध्य तथा राज्य को सामाजिक उत्थान और जनकल्याण का एक साधन मात्र मानते थे।

गॉधीजी द्वारा राज्य की सत्ता का विरोध किए जाने के प्रमुख रूप से निम्न कारण दिए जा सकते है–

(1) दार्शनिक आधार पर राज्य का विरोध करते हुए गॉधीजी का विचार है कि राज्य व्यक्ति के नैतिक विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं करता। व्यक्ति का नैतिक विकास उसकी आन्तरिक इच्छाओं और कामनाओं पर निर्भर है, लेकिन राज्य संगठन शक्ति पर आधारित होने के कारण व्यक्ति के केवल बाहरी कार्यो को ही प्रभावित कर सकता है। राज्य अनैतिक इसलिए है कि वह हमें सब कार्य अपनी इच्छा से नहीं वरन् दण्ड के भय और कानून की शक्ति से बाधित कर कराना चाहता है।

(2) गॉधीजी अहिंसा के पुजारी थे और राज्य एक हिंसामूलक संगठन है। इस कारण भी उनके द्वारा राज्य का विरोध किया जाना स्वाभाविक है।

(3) राज्य का बढता हुआ कार्यक्षेत्र व्यक्ति में स्वावलम्बन और आत्मविश्वास के गुणों को विकसित नहीं होने देता और व्यक्तित्व का विकास अवरूद्ध हो जाता है। एक स्थान पर इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं, "राज्य की शक्तियों में वृद्धि को बडे भय तथा शंका की दृष्टि से देखता हूं क्योंकि ऊपर से देखने पर शोषण को कम करते हुए राज्य एक अच्छा कार्य करता हुआ मालूम पडता है, किन्तु व्यक्ति के व्यक्तित्व का विनाश कर, वह मनुष्य जाति सबसे अधिक हानि पहुंचाता है। हम ऐसे अनेक उदाहरण जानते हैं जहां मनुष्य ने संरक्षक के रूप

में कार्य किया है किन्तु ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जहां राज्य का अस्तित्व वास्तव में दरिद्रों के कल्याण के लिए रहा है।"

राज्य के प्रति अपने दृष्टिकोण के कारण गांधीजी राज्य के कार्यक्षेत्र को कम–से–कम करने के पक्ष में थे।

गॉधीजी का आदर्श राज्य (रामराज्य)

गांधीजी के राजनीतिक विचारों के अर्न्तगत ही गांधीजी द्वारा चित्रित आदर्श राज्य, जिसे वे रामराज्य कहते थे, की रूपरेखा देना उचित होगा।

'रामराज्य' शब्द का प्रयोग कुछ भ्रामक हो सकता है क्योंकि इसका शाब्दिक अर्थ है 'रामचन्द्रजी का राज्य'। वस्तुतः राजा रामचन्द्र के समय और आज की स्थिति में अवस्था और काल का एक लम्बा भेद होने के कारण रामराज्य आज की स्थिति में व्यावहारिक नहीं हो सकता। गांधीजी भी इस बात से परिचित थे। उनके द्वारा 'रामराज्य' शब्द का प्रयोग भावनावश अलंकारिक अर्थ में किया गया है, शाब्दिक अर्थ में नहीं। उनके 'रामराज्य' का अर्थ हैः 'आदर्श व्यवस्था'।

इस सम्बन्ध में यह बात भी स्मरणीय है कि गांधीजी ने भी प्लेटो के समान दो आदर्शों का वर्णन किया हैः (1) पूर्ण आदर्श (2) उप–आदर्श। उनकी पूर्ण आदर्श सामाजिक व्यवस्था के अर्न्तगत राज्य के लिए कोई स्थान नहीं है। लेकिन गांधीजी यर्थाथवादी थे और उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि मानव स्वभाव की की वर्तमान स्थिति को देखते हुए पूर्ण आदर्श की स्थापना सम्भव नहीं है। इसलिए उनके द्वारा व्यावहारिक दृष्टिकोण से उप–आदर्श की कल्पना की गई है और गॉधीजी के आदर्श राज्य के रूप में हमारे द्वारा उनके उप–आदर्श का ही अध्ययन किया जाता है।

गॉधीजी के उप–आदर्श राज्य की विशेषताएं इस प्रकार है–

1. **अहिंसात्मक समाज–** गॉधीजी अपने आदर्श राज्य को अहिंसात्मक समाज के नाम से पुकारते हैं। गॉधाजी के इस आदर्श समाज में राज्य संस्था का अस्तित्व रहेगा और पुलिस, जेल, सेना तथा न्यायालय, आदि शासन की बाध्यकारी सत्ताएं भी होंगी। फिर भी यह इस दृष्टि से अहिंसक समाज है कि इसमें इन सत्ताओं का प्रयोग जनता को आतंकित और उत्पीडत करने के लिए नहीं वरन् उसकी सेवा करने के लिए किया जाएगा। इा आदर्श समाज में कभी–कभी समाज विरोधी तत्वों के विरूद्ध दबाव का प्रयोग करना पड सकता है, किन्तु इस दबाव का रूप सत्याग्रह का होगा, हिंसात्मक नहीं।
2. **शासन का रूप लोकतान्त्रिक–** गांधीजी के आदर्श समाज में शासन का रूप पूर्णतया लोकन्त्रिक होगा। जनता को न केवल मत देने का अधिकार प्राप्त होगा, वरन् जनता सक्रिय रूप से शासन के संचालन में भी भाग लेगी। शासन सत्ता सीमित होगी और सम्भव रूपों में जनता के प्रति उत्तरदायी होगी।
3. **विकेन्द्रीकृत सत्ता–** गॉधीजी के आदर्श राज्य का एक प्रमुख लक्षण विकेन्द्रीकरण सत्ता है। गॉधीजी सम्पूर्ण भारत में प्राचीन ढंग के स्वतन्त्र और स्वावलम्बी ग्राम समाजों की स्थापना करना चाहते थे, जिसका आधार ग्राम पंचायतें होंगी। विकेन्द्रीकरण को और

अधिक सफल बनाने के लिए ऊपर जो भी प्रशासनिक इकाइयां हों, जैसे–प्रादेशिक सरकार, राष्ट्रीय सरकार, आदि के विधान मण्डलों का चुनाव अप्रत्यक्ष प्रणाली से हो जिससे सत्ता का समस्त केन्द्र ग्राम पंचायतें ही बनी रहें। इस प्रकार की व्यवस्था से ग्रामों में स्वशासन और स्वावलम्बन की भावना उत्पन्न होगी और वे वास्तविक अर्थ में स्वतन्त्र होंगे।

4. **आर्थिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण–** गांधीजी के आदर्श राज्य में आर्थिक क्षेत्र के अर्न्तगत भी विकेन्द्रीकरण को अपनाने का सुझाव दिया गया है। विशाल तथा केन्द्रीकरण उद्योग लगभग समाप्त कर दिया जाएंगे और उनके स्थान पर कुटिर उद्योग–धन्धे चलाए जाएंगे। उन मशीनों का तो प्रयोग किया जा सकेगा, जो व्यक्तियों के लिए सुविधाजनक होती है, किन्तु मशीनों को मानवीय श्रम के शोषण का साधन नहीं बनाया जायेगा। हर गांव अपनी आवश्यकता की वस्तुएं स्वयं उत्पन्न करेगा और प्रत्येक व्यक्ति अपने उत्पादन के साधनों का स्वयं स्वामी होगा। इस प्रकार आर्थिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा और शोषण का अन्त हो जाएगा।
5. **नागरिक अधिकारों पर आधारित–** गॉधीजी का राज्य स्वतन्त्रता, समानता तथा अन्य नागरिक अधिकारों पर आधारित होगा। इस समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने और समुदायों के निर्माण की स्वतन्त्रता होगी। इस समाज के अर्न्तगत जाति, धर्म, भाषा, वर्ण और लिंग आदि भेदभाव के बिना सभी व्यक्तियों को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त होंगे।
6. **निजी सम्पत्ति का अस्तित्व–** इस आदर्श राज्य में निजी सम्पत्ति की प्रथा का अस्तित्व होगा, किन्तु सम्पत्ति के स्वामी अपनी सम्पत्ति का प्रयोग निजी स्वार्थ के लिए नहीं, वरन् समस्त समाज के कल्याण के लिए करेंगे। वे यह समझकर कार्य करेंगे कि उनके पास जो सम्पत्ति है उसका वास्तविक स्वामी समाज ही है और समाज के द्वारा उन्हें इस सम्पत्ति का संरक्षक या ट्रस्टी नियुक्त किया गया है।
7. **प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रम अनिवार्य–** इस आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने भरण–पोषण हेतु श्रम करना अनिवार्य होगा। कोई भी मनुष्य अपने निर्वाह के लिए दूसरों की कमाई हडपने का प्रयत्न नहीं करेगा और बौद्धिक श्रम करने वाले व्यक्तियों के लिए भी कुछ–न–कुछ शारीरिक श्रम करना अनिवार्य होगा। सभी व्यक्तियों के द्वारा कुछ–न–कुछ शारीरिक श्रम किये जाने पर समाज में वास्तविक समानता स्थापित हो सकेगी।
8. **वर्ण–व्यवस्था–** गांधजी का आदर्श समाज वर्ण–व्यवस्था पर आधारित होगा। प्राचीन काल की भांति समाज चार वर्णो में विभाजित होगा–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। प्रत्येक वर्ण वंश परम्परा के आधार पर अपना कार्य करेगा, किन्तु विविध वर्णो या वर्गों के व्यक्तियों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त होंगे और किसी प्रकार की ऊंच–नीच की भावना नहीं होगी। गांधीजी के आदर्श समाज में स्त्रियों को सभी क्षेत्रों में समान अधिकार प्राप्त होंगे, किन्तु उनका मुख्य कार्यक्षेत्र घर ही होगा।
9. **अस्पृश्यता का अन्त–** गांधीजी अस्पृश्यता को भारतीय समाज के लिए कलंक मानते थे और उनके आदर्श समाज में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं था।

10. **धर्मनिरपेक्ष समाज–** इस समाज में किसी एक विशेष धर्म को आश्रय प्राप्त नहीं होगा। राज्य की दृष्टि से सभी धर्म समान होंगे और सभी धर्मों के अनुयायियों को समान सुविधाएं प्राप्त होंगी।
11. **गौवध निषेध–** गांधीजी भारत जैसे राज्य में धार्मिक तथा आर्थिक दोनों ही दृष्टि से गाय की रक्षा को बहुत अधिक आवश्यक मानते थे। इसलिए उनके द्वारा अपने आदर्श समाज में गौ हत्या का निषेध किया गया है।
12. **मद्य–निषेध–** गांधीजी का निश्चित विचार था कि मद्य और अन्य मादक पदार्थ का प्रयोग व्यक्तियों का चारित्रिक पतन करता है। अतः उनके आदर्श समाज में न तो मादक वस्तुओं का उत्पादन होगा और न उनकी विक्री।
13. **निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा–** गांधीजी के आदर्श समाज में गांव, गली और मोहल्लें में बुनियादी ढंग की स्वावलम्बी पाठशालाएं होंगी, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को कम–से–कम प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जायगी।
14. **अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शान्तिप्रियता–** गांधीजी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की धारणा में विश्वास करते थे, इस कारण उनका आदर्श राज्य अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अन्य राज्यों के साथ मैत्री, सदभावना और सहयोग के आधार पर सम्बन्ध स्थापित करेगा।

सन्दर्भ–

1. राघवन अययर (1986) : दि मोरल एण्ड पॉलिटिकल राइटिंग्स ऑफ महात्मा गॉधी, वॉल्यूम–1, सिविलाइजेशन, पॉलिटिक्स एण्ड रिलीजन, ऑक्सफोर्ड क्लेरेंडन प्रेस, आक्सफोर्ड।
2. मैकन्जी ब्राउन (1964) : दि व्हाइट अम्ब्रेला : इण्डियन पॉलिटिकल थॉट, फ्रॉम मनु टु गॉधी जैको पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. कालेकर काका (1976) : गॉधी का जीवन दर्शन, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद।
4. कालेकर काका (1965) : सत्याग्रह : विचार और युद्धनीति, अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ।
5. कालेकर काका (1967) : गॉधीवाद और समाजवाद, सस्ता साहित्य मण्डल, इलाहाबाद।
6. यशपाल (1951) : रामराज्य की कथा, विप्लव प्रकाशन, लखनऊ।
7. सिंह विश्वनाथ (1968) : महात्मा गॉधी और धर्म, साक्षरता निकेतन, लखनऊ।
8. शर्मा बी. एम., शर्मा दत्त रामकृष्ण, शर्मा सविता (2017) : गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
9. जैन पुखराज (2009) : राजनीति विज्ञान, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा।